राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
माध्यमिक पाठ्यक्रम : हिंदुस्तानी संगीत
पाठ 4 : विधाओं का अध्ययन - ध्रुपद तथा धमार
कार्यपत्रक - 4

1. ध्रुपद और धमार जिस प्राचीन रचनात्मक विधा से उत्पन्न हुए हैं उसकी पहचान कीजिये।
2. चौताल, मत्त, ब्रह्म, लक्ष्मी, सूल, तीव्रा इत्यादि ध्रुपद के साथ बजने वाली कुछ तालें हैं। उस वाद्य का उल्लेख कीजिये जिस पर इन तालों को बजाया जाता है।
3. धमार से संबंधित त्यौहार का उल्लेख कीजिये । धमार के साथ बजने वाली ताल की भी पहचान कीजिये ।
4. '16वीं शताब्दी को ध्रुपद का स्वर्ण युग माना जाता है'। इस कथन का औचित्य अपने शब्दों में सिद्ध कीजिये ।
5. ध्रुपद के दो मध्य कालीन राजसी आश्रयदाताओं की पहचान कीजिये । इनके योगदान की व्याख्या कीजिये ।
6. ध्रुपद की चार बानियां हैं। मियां तानसेन द्वारा प्रारंभ की गयी बानी की पहचान कीजिये।
7. 'ध्रुपद और धमार गायन में लयात्मक सृजन की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है'। इस कथन की अपने शब्दों में व्याख्या कीजिये।
8. राजा मानसिंह तोमर ने अपनी संगीत कृति 'मानकुतुहल' में ध्रुपद की भाषा के विषय में लिखा है। इस भाषा की पहचान कीजिये ।
9. ध्रुपद और धमार गायन के उस भाग का संक्षिप्त वर्णन कीजिये जिसमें ताल की संगति नहीं होती है।
10. ध्रुपद गायन की निजी विशेषता की पहचान कीजिये जिसमें बंदिश के बोलों को लेकर सृजन किया जाता है।